"आदौ पूज्यो गणेशः"

–डॉ. भावना आचार्य

सहाचार्य – संस्कृत

"नमस्तस्मै गणेशाय ब्रह्मविद्याप्रदायिने।

यस्यागस्त्ययते नाम विघ्नसागरशोषणे।। [1]

चिरकाल से भारत आध्यात्मिक शक्ति–सम्पन्न रहा है क्योंकि हमारे पूर्वजों ने ऐसे अनेक पर्वों को प्रवर्तित किया है, जिनमें सेतु से लेकर हिमाचल पर्यन्त एक ही रीति से उत्सव मनाये जाते है। उन पर्वो में भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी विशेष महत्त्वपूर्ण है, जिसे विनायक चतुर्थी या गणेश चतुर्थी भी कहा जाता है। धर्मप्राण भारतीयजन इस दिन श्रीगणेश का पूजन–अर्चन करते है। सर्वसमर्थ श्रीगणेश का अर्चन–वन्दन व्यक्ति को सुख–समृद्धि प्रदान करता है।

हिन्दू धर्म के उपास्य देवताओं में ओंकार की साक्षात् मूर्ति श्रीगणेश का महत्त्व असाधारण है। उनका स्वरूप नितान्त अव्यक्त, अचिन्त्य और अपार है। उनका रूप परम आराध्य, असामान्य और ध्येय है। समस्त देवताओं में गणेश ही एक ऐसे देवता है जिनका समस्त शुभ कार्यो के प्रारंभ में सर्वप्रथम पूजन किया जाता है। यद्यपि सभी देवता अनेक शक्तियों से सम्पन्न है तथापि विशिष्ट कार्य के लिए सभी लौकिक व धार्मिक कार्यो का प्रारंभ श्रीगणेश के स्मरण तथा पूजन से होता है क्योंकि ये ''सर्वकामफलप्रद'' देवता है। इनकी पूजा किये बिना किसी भी शास्त्रीय तथा लौकिक शुभ कर्म का प्रारंभ नहीं होता।

"शुभाशुभे वैदिकलौकिके वा त्वमर्चनीयः प्रथमं प्रयत्नात।"

श्री गणपत्यथर्वशीर्ष में कहा गया है कि ''ओंकार का ही व्यक्त स्वरूप गणपति देवता है।'' सब प्रकार के मंगल कार्यो और देवता–प्रतिष्ठापन के आंरभ में श्रीगणपति की पूजा करने का कारण यही है। जिस प्रकार प्रत्येक मंत्र के आरम्भ में ओंकार का उच्चारण आवश्यक है, उसी प्रकार प्रत्येक शुभावसार पर गणपति की पूजा अनिवार्य है और यह शास्त्रीय परम्परा है।

''गणपत्यथर्वशीर्ष'' में कहा गया है – ''आप ही प्रत्यक्ष तत्त्व 'परमात्मा' हैं।'' – **'त्वमेव प्रत्यक्षं तत्त्वमसि।'** [2] दैनन्दिन जीवन में कार्यसिद्धि में उपस्थित विघ्न–बाधा को शास्त्रीय भाषा में ''प्रतिबन्धक'' कहा गया है और विघ्नेश गणेश कार्य को निर्विघ्न पूर्ण करते है इसलिए सभी हिन्दू परिवारों में बच्चों को विद्यारम्भ कराते समय श्रीगणेश का पूजन कराया जाता है, जिससे बच्चा उत्तम विद्या प्राप्त कर श्रेष्ठ विद्वान् बने। विवाह के शुभ अवसर पर वर–वधू के दाम्पत्य जीवन की सुख की कामना के लिए गणपति का स्मरण किया जाता है। घर के बाहर जाने के समय प्रायः गणेश–स्मरण यात्रा सानन्द करने के लिए किया जाता है–

विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।

संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते।।

मंगलमूर्ति श्रीगणेश का अस्तित्व शक्ति एवं शिव के युगल तत्त्वों का साकार स्वरूप है। कुछ पौराणिक कहानियों के अनुसार विष्णु भगवान् ही माता पार्वती की इस वात्सल्य–मूर्ति में समाविष्ट है। इसीलिए जीवन के प्रत्येक महत्त्वपूर्ण कार्य के आंरभ का शुभारम्भ तभी होगा, जब इन दोनों तत्त्वों का सुखद स्वरूप सर्वोपरि होगा, सर्वप्रथम होगा। श्रीगणेश की सर्वप्रथम पूजा का यही रहस्य है, यही कारण है।

'गण' तथा 'ईश' से गणेश शब्द बना है, जिसका अर्थ है गणों का नेता। गणेश शब्दगत प्रथम अक्षर 'ग' ज्ञानार्थवाचक है और द्वितीय अक्षर 'ण' निर्वाणवाचक है तथा अंतिम 'ईश' शब्द है स्वामीवाचक। इस प्रकार सम्पूर्ण गणेश का शब्दार्थ है – ज्ञान तथा निर्वाण का स्वामी, परमेश्वर आदि।

ऋग्वेद में गणपति की स्तुति करते हुए कहा गया है – **'न ऋते त्वत् क्रियते किंचन'** [3] । अर्थात् 'हे गणपते! तुम्हारे बिना कोई भी कर्म नहीं किया जाता।' जिन गणेश का प्रत्येक शुभकार्य के प्रारंभ में सर्वप्रथम पूजन करना अनिवार्य है, उन्हें पूज्य वैदिक देवता मानकर ही सर्वप्रथम स्मरण करते हुए शुक्ल यजुर्वेद में भी कहा गया है।

गणानां त्वा गणपतिं हवामहे,

प्रियाणां त्वा प्रियपतिं हवामहे।। [4]

सिद्धिदाता गणेश वैदिक तथा पौराणिक देवी–देवताओं में जिस प्रकार मान्य है, साधारण लोकजीवन में भी उसी प्रकार पूज्य है। भारतीय साहित्य में गणपति के विभिन्न नामों का उल्लेख है। ब्रह्मवैवर्त पुराण में पार्वतीनन्दन के आठ नामों का निर्देश है –

गणेशमेकदन्तं च हेरम्ब विघ्ननायकम्।

लम्बोदरं शूर्पकर्ण गजवक्त्रं गुहाग्रजम्।। [5]

ये आठ नाम है – गणेश, एकदन्त, हेरम्ब, विघ्ननायक, लम्बोदर, शूर्पकर्ण, गजवक्त्र, गुहाग्रज।

प्रत्येक कार्य को मंगलमय और परिपूर्ण बनाने के उद्देश्य से श्रीगणेश के द्वादश नामों का संकीर्तन भी किया जाता है–

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।

लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशों विनायकः।।

धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।

द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि।।

इन श्लोकों में श्रीगणेश के बारह नाम इस प्रकार है– सुमुख, एकदन्त, कपिल, गजकर्ण, लम्बोदर, विकट, विघ्ननाशक, विनायक, धूम्रकेतु, गणाध्यक्ष, भालचन्द्र और गजानन।

स्कन्दपुराण में लिखा हैं – ''माँ पार्वती ने अपने उबटन की बत्तियों से एक शिशु बनाकर उसे जीवित करके पुत्र मान लिया और कहा – ''मैं स्नान कर रही हूं, तुम किसी को भीतर मत आने देना।'' इसी बीच शिवजी आ गये। इन्होंने शिवजी को रोका, दोनों में घोर युद्ध हुआ। शिवजी ने इनका मस्तक काट लिया। इसे सुनकर पार्वती 'पुत्र–पुत्र' कहकर रूदन करने लगी। इसी बीच गजासुर शिवजी से लड़ने आया। शिवजी ने उसका मस्तक काटकर इनके धड़ पर जमा दिया। इससे ये 'गजानन' हुए।

अनेक नामों से विभूषित श्रीगणेश का जनजीवन के लोकाचार, व्यवहार तथा विचार में वही स्थान है जो उनकी माता पार्वती ने चाहा था। वे चाहती थी कि मेरा पुत्र देवताओं के मध्य प्रथम पूज्य हो। शिवजी ने भी उनकी मातृभक्ति, सेवा तथा लगन से प्रभावित होकर यही घोषित किया था कि 'गणेश देवताओं में प्रथम पूज्य होंगे।

श्रीगणेश परम मंगल ओंकार स्वरूप है, साथ ही बुद्धि के अधिष्ठाता देव भी है। स्वयं असाधारण युक्ति–बुद्धि से सम्पन्न होने के कारण अपने भक्तों को सद्बुद्धि प्रदान करते हैं। जिस प्रकार प्रत्येक मंत्र के आरम्भ में ओंकार का उच्चारण आवश्यक है, क्योंकि ओंकार का उच्चारण मंगलप्रद है । [6] उसी प्रकार प्रत्येक शुभावसर पर गणपति–पूजन अनिवार्य है। अनादिकाल से श्रीगणेश की कृपा–प्राप्ति के लिए पूजा होती आ रही है और यह परम्परा अनवरत चलती ही रहेगी।

16–17 ''शान्ताकारम्''

शिव कॉलोनी, नोखा रोड़,

हिरण मगरी से.4,,

उदयपुर – 313002 (राज.)

संदर्भ :-

1. गणेशपुराण, उपासना. 1/1
2. गणपत्यथर्वशीर्ष – 1
3. ऋग्वेद 10/112/9
4. शुक्ल यजुर्वेद 23/19
5. ब्रह्मवैवर्त पुराण 3/44/85
6. नारदपुराण, पूर्व 51/10